(New)

International Indian School, Riyadh.
Academic Year = 2015-16.
Revision Worksheet for SA-I

Class: VII
Sub: Hindi

नवीन हिन्दी व्यावहारिक व्याकरण तथा रचना

प्र०-1 नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) अमृत
(ख) गद्य
(ग) सम्मान
(घ) राग
(ङ) मानव
(च) वरदान
(छ) आस्तिक
(ज) सभ्य
(झ) निंदा
(ञ) धनी

प्र०-2 नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्याय शब्द लिखिए।

(क) तालाब
(ख) तोता
(ग) दिन
(घ) दूध
(ङ) नौका
(च) नया
(छ) पंडित
(ज) पक्षी
(झ) पुष्प
(ञ) बालक

प्र०-3 दो उदाहरण सहित उपसर्ग की परिभाषा लिखिए।

प्र०-4 दो उदाहरण सहित प्रत्यय की परिभाषा लिखिए।

प्र०-5 विषय "स्वावलंबन" पर अनुच्छेद लिखिए।

प्र०-6 "प्रधानाचार्या को छात्रवृत्ति के लिए पत्र लिखिए"।

प्र०-1 नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

बचपन में ही मैंने सुना था, 'खेलोगे, कूदोगे, होगे ख़राब'। कुछ लोग आज भी सोचते हैं कि खेलने-कूदने से समय नष्ट होता है, स्वास्थ्य बनाने के लिए व्यायाम कर लेना ही काफी है। परंतु खेलकूद से स्वास्थ्य तो बनता ही है, साथ-साथ मनुष्य कुछ ऐसे गुण भी सीखता है, जिनका जीवन में विशेष महत्व है, और जो केवल व्यायाम की अपेक्षा खेलकूद से ही प्राप्त कर सकते हैं। सहयोग से काम करना, विजय मिलने पर अभिमान न करना, खेलों के द्वारा अनायास सीखे जा सकते हैं। खेल के मैदान में स्वास्थ्य नहीं बनता, वरन् मनुष्य बनता है। खिलाड़ी उन बातों को सीखता है, जो नागरिक जीवन की समस्या को सुलझाने में सहायता प्रदान करती है।

(क) बचपन में आपने क्या सुना था?
(ख) लोग क्या सोचते थे?
(ग) खेलने-कूदने से मनुष्य क्या सीखता है?
(घ) खेल के मैदान में क्या बनता है?
(ङ) जीवन की समस्या को सुलझाने के लिए क्या आवश्यक है?
(च) विलोम शब्द : जीवन, सहयोग
(छ) पर्याय शब्द : अभिमान, मनुष्य
(ज) एक उपसर्ग / एक प्रत्यय छाँट कर लिखो।
(झ) वाक्य बनाइए : खिलाड़ी
नागरिक

(ञ) गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

International Indian School, Riyadh.
Academic Year = 2015-16
Summative Assessment - I

Class : VII
Sub. : Hindi

वसंत भाग - 2

पाठ	प्रश्नोत्तर
(1) हम पंछी उन्मुक्त गगन के	कविता से 1,2,3
(2) दादी माँ	कहानी से 2,3
(3) हिमालय की बेटियाँ	लेख से 2,3,4
(4) कठपुतली	कविता से 1,2,3
(5) एक तिनका	कविता से 2,3,4
(6) पापा खो गए (7) अपूर्व अनुभव	मौखिक परीक्षा

प्र०-8 नीचे लिखे पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो!
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो न निराश करो मन को।

सँभलो कि सुयोग न जाए चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला?
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।
अखिलेश्वर है अवलंबन को,
नर हो न निराश करो मन को।

(क) प्रस्तुत काव्यांश में कवि मनुष्य को निराश क्यों नहीं होने देना चाहता?

(ख) कवि के अनुसार मानव जीवन किस प्रकार व्यर्थ न होगा?

(ग) समय रहते मनुष्य को क्यों संभल जाना चाहिए?

(घ) संसार को निरा सपना क्यों नहीं समझना चाहिए?

(ङ) मनुष्य को कठिनाई में किसका अवलंबन प्राप्त है?

(च) विलोम शब्द : जन्म, निराश

(छ) पर्याय शब्द : जग, काम

(ज) वाक्य बनाओ : पथ, सुयोग

— X —